Dabang Dunia Date: 19.10.2019

मूल्य ₹ 1.00 पृष्ठ-08
www.dabangdunia.co
वर्ष-8, अंक 67
इंदौर, शनिवार, 19 अक्टूबर 2019
दबंग दुनिया 2
दिलदार शहर का सबसे ताज़ा अख़बार

सकारात्मक संवाद से लोगों में मानसिक रूप से विश्वास पैदा करें- डॉ. राजदान

दबंग रिपोर्टर ■ इंदौर

दो दिवसीय नेशनल हेल्थ कॉन्फ्रेंस 'हेल्थ-कॉन'

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय (एसवीवीवी) और चोइथराम कॉलेज ऑफ नर्सिंग के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय नेशनल हेल्थ कॉन्फ्रेंस 'हेल्थ-कॉन' का शुभारंभ श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में शुक्रवार को हुआ। इस मौके पर 'मेंटल हेल्थ केयर इन इंडिया-चैलेंजेस एंड अपॉर्च्युनिटीज' थीम पर मुख्य वक्ता मानसिक अस्पताल बाणगंगा के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. रामगुलाम राजदान, डॉ. सुनील चांदीवाल, चोइथराम कॉलेज ऑफ नर्सिंग की ऑफिसिंग प्रिंसिपल डॉ. शीतल सक्सेना ने चर्चा की। कार्यक्रम में अतिथि डीएवीवी के पूर्व कुलपति डॉ. भरत छपरवाल थे। इस दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस में छह सत्र होंगे और संबंधित क्षेत्र के विशेषज्ञ इसे संबोधित करेंगे।

डॉ. राजदान ने अपने वक्तव्य में मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने महाभारत और रामायण के उदाहरणों द्वारा बताया कि किस प्रकार सकारात्मक संवाद द्वारा लोगों में मानसिक रूप से विश्वास पैदा किया जाता रहा है। उन्होंने बताया कि डब्ल्यूएचओ के अनुसार 2012 से 2030 के बीच मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति के कारण आर्थिक नुकसान 1.3 ट्रिलियन डॉलर रह सकता है। उन्होंने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को भी शारीरिक स्वास्थ्य समस्याओं की तरह ही प्रभावी देखभाल की आवश्यकता है। भारत में मानसिक स्वास्थ्य संसाधन सीमित हैं और सरकार को इस क्षेत्र में भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। डॉ. भरत छपरवाल ने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य को शारीरिक स्वास्थ्य से अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य के बारे में लोगों को शिक्षित करना जरूरी है। प्रेसीडेंट नर्सिंग ऑनर सोसायटी डॉ. उषा उकांडे ने हेल्थ कॉन का परिचय देते हुए सरकारी योजना और भारत में मानसिक स्वास्थ्य में हमारी भूमिका पर जोर दिया।

आर्थिक उत्पादकता में होता है नुकसान

एसवीवीवी के कुलपति डॉ. उपिंदर धर ने कहा कि दुनियाभर में बढ़ते मानसिक विकार के कारण मानसिक स्वास्थ्य महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है। इससे देश की आर्थिक उत्पादकता में भी नुकसान होता है। बढ़ती डिजिटल प्रौद्योगिकी के कारण मानसिक विकार जैसे इंटरनेट निर्भरता और मोबाइल की लत से जुड़ी नई समस्याएं सामने आई हैं। कॉन्फ्रेंस में डॉ. सुनील चांदीवाल ने कहा कि समाज को मधुमेह और रक्तचाप जैसी अन्य बीमारियों जैसे ही मानसिक विकार को स्वीकार करना चाहिए और समस्या के शीघ्र निदान पर जोर देना चाहिए। इंटरनेट का युग व्यक्तियों के बीच सहकर्मी दबाव और प्रतिस्पर्धा पैदा कर रहा है। हेल्थ कॉन के चेयरपर्सन डॉ. केएन गुरुप्रसाद ने कहा कि यह सम्मेलन अनुसंधान शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों को मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में उपयोग की जाने वाली नवीन पद्धति और प्रौद्योगिकियों के बारे में विमर्श करने के लिए एक मंच है। पहले सत्र में प्रोफेसर पीजी कॉलेज ऑफ नर्सिंग भिलाई डॉ. रोजा प्रिंसी ने 'मेंटल हेल्थ- ए पब्लिक अवेयरनेस' पर प्रकाश डाला। उन्होंने वैश्विक, राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर मानसिक बीमारियों के बोझ पर जोर दिया। निम्हांस बेंगलुरु के डॉ. रामचंद, डॉ. के लतिका व अन्य प्रख्यात वक्ताओं ने भी सभा को संबोधित किया।

People Samachr Date: 19.10.2019

मेंटल हेल्थ केयर इन इंडिया चैलेंजेस एंड अपॉर्च्युनिटी विषय पर दो दिवसीय नेशनल हेल्थ कॉन्फ्रेंस 'हेल्थकॉन' सम्पन्न

इंटरनेट व्यक्तियों के बीच सहकर्मी दबाव और प्रतिस्पर्धा पैदा कर रहा है

IAmIndore ● इंदौर
editor@peoplessamachar.co.in

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय और चोइथराम कॉलेज ऑफ नर्सिंग के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय नेशनल हेल्थ कॉन्फ्रेंस हेल्थकॉन 2019 का आयोजन किया गया। नेशनल हेल्थ कॉन्फ्रेंस की थीम मेंटल हेल्थ केयर इन इंडिया चेलेंजेस एंड अपॉर्च्युनिटी रखी गई। कॉन्फ्रेंस के मुख्य अतिथि डॉ. भरत छपरवाल पूर्व कुलपति डीएवीवी, मुख्य वक्ता डॉ. राम गुलाम राजदान चिकित्सा अधीक्षक मानसिक अस्पताल बाणगंगा, डॉ. सुनील चांदीवाल निदेशक चोइथराम हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, डॉ. शीतल सक्सेना ऑफिसिंग प्रिंसिपल चोईथराम कॉलेज ऑफ नर्सिंग उपस्थित थे।

डॉ. उपिंधर ने कहा कि दुनिया में बढ़ते मानसिक विकार के कारण मानसिक स्वास्थ्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है। इससे देश की आर्थिक उत्पादकता में भी नुकसान होता है। बढ़ती डिजिटल प्रौद्योगिकी के कारण मानसिक विकार जैसे इंटरनेट निर्भरता और मोबाइल की लत से जुड़ी नई समस्याएं सामने आई हैं। डॉ. सुनील चांदीवाल ने कहा कि समाज को मधुमेह और रक्तचाप जैसी अन्य बीमारियों जैसे ही मानसिक विकार को स्वीकार करना चाहिए और समस्या के शीघ्र निदान पर जोर देना चाहिए। इंटरनेट युग व्यक्तियों के बीच सहकर्मी दबाव और प्रतिस्पर्धा पैदा कर रहा है। ऐसी प्रतिस्पर्धाओं से मन कुंठित हो जाता है। यही कुंठा आगे जाकर अवसाद का रूप ले लेती है। हर व्यक्ति की मानसिक स्थिति अलग होती है, जिसे समझना आसान नहीं होता। इस दौर में मानसिक संतुलन बनाए रखना जरूरी है। यही संतुलन जीवन की मुख्य धारा से जोड़ता है और अच्छा व्यक्ति बनने में सहायक होता है। संयम रखें और सरल जीवन-यापन करें। मुख्य वक्ता डॉ. राम गुलाम राजदान ने अपने वक्तव्य में मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। इन्होंने महाभारत और रामायण के उदाहरणों द्वारा बताया कि किस प्रकार सकारात्मक संवाद द्वारा लोगों में मानसिक रूप से विश्वास पैदा किया जाता रहा है। डब्ल्यूएचओ के अनुसार 2012 से 2030 के बीच मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति के कारण आर्थिक नुकसान 1.3 ट्रिलियन डॉलर रहा है। मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को भी शारीरिक स्वास्थ्य समस्याओं की तरह ही प्रभावी देखभाल की आवश्यकता है। भारत में मानसिक स्वास्थ्य संसाधन सीमित हैं और सरकार को इस क्षेत्र में भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। मुख्य अतिथि डॉ. भरत छपरवाल ने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य को शारीरिक स्वास्थ्य से अलग नहीं किया जा सकता है। मानसिक स्वास्थ्य के बारे में लोगों को शिक्षित करना जरूरी है।